पारंपरिक तकनीक की अहम भूमिका को नकार नहीं सकते

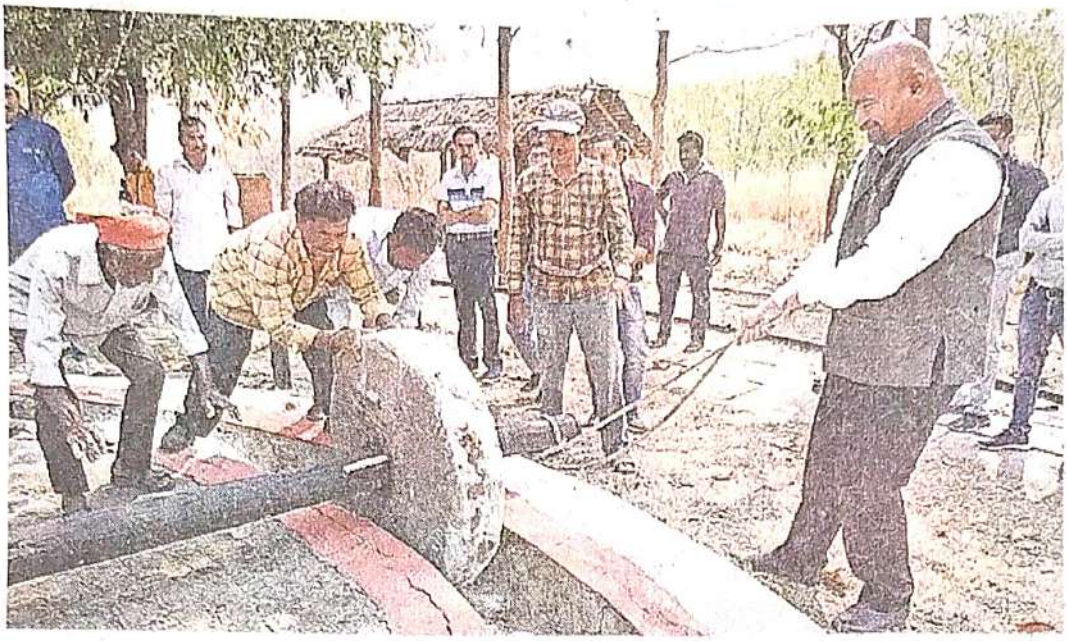

मानव संग्रहालय में पारंपरिक तकनीकी ज्ञान का प्रदर्शन करते कलाकार। ● सौ. आयोजक

● मानव संग्रहालय में पारंपरिक तकनीकी ज्ञान का प्रदर्शन

मानव संग्रहालय द्वारा संग्रहालय स्थित पारंपरिक तकनीकी मुक्ताकाश प्रदर्शनी में आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड के लोक एवं जनजातीय कलाकारों द्वारा पारंपरिक तकनीकी ज्ञान का प्रदर्शन किया गया। इस मौके पर स्कूल आफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर के निदेशक प्रोफेसर कैलासा राव एम ने आंध्रप्रदेश की चूना बनाने की भट्टी सुन्नापुबत्ती, छत्तीसगढ़ का तेल निकालने का उपकरण तिरही एवं झारखंड की लोहा गलाने की भट्टी मेढ़हट्ट कुठ्ठी का पारंपरिक तकनीकी के देशज उपकरण का लाइव प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में संग्रहालय के निदेशक प्रो. अमिताभ पांडे ने बताया कि आधुनिक तकनीक पर्यावरण को नुकसान पहुंचा सकते हैं पर सदियों तक लोगों के निर्वाह करने वाले पर्यावरण के अनुरूप तकनीकों का आविष्कार किया, वो आज भी प्रासंगिक है। आज भी जिसे हम पारंपरिक ज्ञान कहते हैं, वह वास्तव में वैज्ञानिक तर्क पर आधारित है। कार्यक्रम समन्वयक डा. सोमा किरो ने बताया कि संस्कृति एवं सौन्दर्य अभिव्यक्ति के कारण हस्त निर्मित विभिन्न रूपों और आकारों में पूरे देश में व्यापक रूप से प्रचलित है। इस कार्यशाला में छत्तीसगढ़ के पंडित राम रजवार एवं सौहाद्री बाई एवं मोहर लाल ने लोकसमूह के द्वारा तिरही में विभिन्न प्रकार के बीजों से तेल निकालने की पारंपरिक तकनीक की जानकारी दी। झारखंड से आए अर्जुन बिरिजिया, रामधनी एवं थेडोर ने लोह अयस्क से लोहा निकलने की तकनीक के बारे में बताया।